□□□□□□ □□□□□□□□□

जनसत्ता 11 जुलाई, 2014 : बीती जून में जसि दनि केंद्र सरकार के हदिी हमियती □कपरवाने ने तमलिनाडु की धरती में द्रवडि□ जुंबशि पैदा की, मैं चेन्नई में था□ सुबह-सुबह ही स्थानीय अंगरेजी अखबारों ने प्रदेश का सयिासी मजिाज बता दयिा□ □क स्टॉल से दुर्लभ हदिी अखबार लयिा तो कुछ मुख्यधारा का बोध हुआ□ स□क पर आया तो वहां न हदिी थी, न अंगरेजी□ केवल तमलि□ छुटपन से मन में समाया □क मथिक टूट गया कि तमलिनाडु में आमजन भी अंगरेजी जानते हैं, बोलते हैं□ असल में लगा कि इस शहर में इशारों की राष्ट्रभाषा ही ज्यादा काम की है□ हदिी में पूछो तो की□क जवाब- 'नो हदिी!' तो भइया इंगलशि? 'कुंजम-कुंजम' (थो□ी-थो□ी)□ इसी 'कुंजम-कुंजम' अंगरेजी के सहारे उस दनि शहर में हमारा काम चला□ ऑटो की सैर से लेकर भोजनालयों और बाजार तक 'कुंजम-कुंजम' चला और जैसे □क नसीहत भी मलिी कि हे, हदिी के आर्यपुत्र! अगली बार इस धरती पर आना तो 'कुंजम-कुंजम' तमलि के साथ! हमने सयाने हदिीवादी की तरह उन्हें टुटही अंग्रेजी में यह ज्ञान देने की कोशशि की कि भइया हदिी सीखोगे तो कई सूबों में काम चल जा□गा□ मलयालयिों की तरह तरक्की की राह खुलेगी□ पर घोर तमलिवादी हमारे इस भाषाई चुग्गे पर नहीं फंसे और कहा- 'ओनली तमलि!' हठीला भाव यह था कि सबसे भली हमारी भाषा की कुइयां□ तुम मगन रहो हदिी के महासागर में□

अपने मुल्क में शायद पहली बार हदिी के इस नषिद्धि क्षेत्र से हमारा पाला प□ा था□ 'मद्रास' में हदिी वरिोध की कहानयिां सुनी बहुत थीं□ पर यह वरिोध से ज्यादा तारीखी अस्वीकार्य था□ यानी हमें मंजूर नहीं आपकी ब्राह्मणवादी, साम्राज्यवादी आर्यभाषा□ उस दनि अंग्रेजी अखबारों में जो लेख छपे थे, उनका □क भाव यह भी था कि संघ के हदिुत्व □जेंडे के तहत तमलिनाडु और अन्य अहदिी राज्यों में हदिी लादी जा रही है□ 1930 के दशक से लेकर साठ के दशक तक के हदिीद्रोही तमलि बलदिानयिों को याद करते हु□, द्रवडि□ नेताओं की धमकयिां सुर्खयिां बनी थीं कि हदिी के मसले पर स□क पर वैसा ही रक्तपात होगा जो अतीत में हुआ था□ हदिी वरिोधी अखबार आजादी के पहले मद्रास प्रेसीडेंसी के प्रमुख सी राजगोपालाचारी की साजशि और रामास्वामी नायकर (पेरयिार), अन्नादुरै से लेकर द्रवडि□ कझगम और आज की द्रमुक के बखान में लगे थे□ □क लेख ने बाकायदा अन्नादुरै की उस हदिी वरिोधी नजीर का हवाला दयिा था, जसिमें कहा गया था कि बोलने वालों की संख्या के आधार पर हदिी को राष्ट्रभाषा बनाने की बात है तो कौवे की जगह मोर को राष्ट्रीय पक्षी क्यों बनाया गया□ करुणानधिि और वाइको जैसे द्रवडि□-तमलि फरहराधारी आज भी ऐसी ही जहरीली मसिाल देते हैं□

हालांकि आज के तमलिनाडु में □क पी□ी ऐसी भी है, जो भाषा के इस दुराग्रह से मुक्त होने के फेर में दखिती है□ असल में आम लोग वरिोध की इस राजनीति को थो□ा-बहुत बूझने लगे हैं□ तुरंता तरीके से कुछ जानकारी जुटाने पर पता चला कि हाल में स्थानीय अभभिावकों और स्कूलों ने अदालत से तमलि अनवािर्यता वाले फरमान को वापस लेने की मांग उठाई है, ताकि हदिी में स्कूली प□ाई का रास्ता खुल सके□ तकरीबन पनचानबे साल पहले स्थापति चेन्नई की दक्षणि भारत हदिी प्रचार सभा तो यहां तक दावा करती है कि □क वक्त जन्हिोंने हदिी वरिोधी आंदोलन में ब□-च□ कर भाग लयिा था, वे खुद बच्चों को हदिी प□ाने के लि□ भेज रहे हैं□ उनका यह दावा तसल्ली देता है कि हर साल छह लाख लोग यहां हदिी की परीक्षा देते हैं□

इसके बावजूद सच्चाई यही है कि चेन्नई में हदिी वरिोध उस भावनात्मक ज्वर में बदल चुका है, जहां तर्क और तरफदारी की सारी खुराक नाकाम हो जाती है□ मैं सोच में प□ गया कि क्या वास्तव में देश 'साम्राज्यवादी' हदिी के बनिा संवाद कर सकता है! क्या अस्सी साल पहले सी राजगोपालाचारी वास्तव में सबसे नादान जदि कर बैठे थे कि पूरे मद्रास सूबे (तत्कालीन) को हदिी प□ा कर मानेंगे?

इसका जवाब मुझे उस शाम शहर के मरीना सागर तट पर वचिरते हु□ मलि गया□ सांझ की उफनाई लहरों के संग तस्वीर खचिवाने के लि□ मेरी पत्नी ने □क अजनबी से मदद मांगी□ मदद हदिीमें मांगी गई थी□ जवाब मलिा तो लग गया वह सैलानी भी कहीं दूर का है, पर हदिी बोल सकता है□ फोटो खचिवाने के बाद हमने शुक्रयिा अदा कयिा और खासतौर पर हदिी में दीर्घ संवाद के लि□□ 'अपनी हदिी' की तारीफ पर उसने फूलते हु□ कहा- 'ओह! इंडयिा में हदिी

जानना जरूरी है... हिंदी नहीं तो जिंदगी नहीं!' असम के जाज नामक इस युवा ने जैसे हिंदी के हक में राष्ट्रीय घोषणा कर दी थी। जाहिर है, इस घोषणा को तमिलनाडु और द्रविड़ सियासत तक पहुंचने में काफी वक्त लग सकता है।

फेसबुक पेज को लाइक करने के लिए क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लिए क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta